BSKC103

बी.ए. संस्कृत आनर्स कार्यक्रम **(BASKH)**

(स्नातक कला उपाधि कार्यक्रम)

सत्रीय कार्य **(द्वितीय छमाही)**

(Second Semester)

जुलाई 2023 एवं जनवरी 2024 सत्रों के लिए

BSKC103 लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

बी.ए. संस्कृत आनर्स कार्यक्रम **(BASKH)**

कोर पाठ्यक्रम

सत्रीय कार्य **BSKC103** लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य

पाठ्यक्रम कोड- **BSKC103**

पाठ्यक्रम शीर्षक- लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य

सत्रीय कार्य **BSKC103/TMA/2023-2024**

सत्रीय कार्य (जुलाई 2023 एवं जनवरी 2024 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड- **BSKC103/TMA/2023-2024**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (**TMA**) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है ।

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठयक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनाँक : .....

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जुलाई 2023 सत्र के लिए : अक्टूबर 2023

जनवरी 2024 सत्र के लिए : अप्रैल 2024

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास :** उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

(क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

(ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

(ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य **BSKC103** लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य

पाठ्यक्रम कोड- **BSKC103**

पाठ्यक्रम शीर्षक- लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य

सत्रीय कार्य **BSKC103/TMA/2023-2024**

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

प्रश्न 1 .अधोलिखित गद्यांश में से किन्हीं दो की व्याख्या कीजिए

((20× 2= 40))

क. सोऽश्रुगद्गदमगदत्–श्रूयतां महाभाग! विदर्भो नाम जनपदः, तस्मिन्भोजवंशभूषणम्, अंशावतार इव धर्मस्य, अतिसत्त्वः, सत्यवादी, वदान्यः, सुविनीतः, विनेता प्रजानाम्, रंजितभृत्यः, कीर्तिमान्, उदग्रो , बुद्धिमूर्तिभ्याम् उत्थानशीलः, शास्त्रप्रमाणकः, शक्यभव्यकल्पारम्भी, संभावयिता बुधान्, प्रभावयिता सेवकान्, उद्भावयिता बन्धून्, न्यग्भावयिता शत्रून्, असंबद्धप्रलापेष्वदत्त कर्णः, कदाचिदप्यवितृष्णो गुणेषु, अतिनदीष्णः कलासु, नेदिष्ठो धर्मार्थसंहितासु, स्वल्पेऽपि सुकृते सुतरां प्रत्युपकर्त्ता, प्रत्यवेक्षिता कोशवाहनयोः, यत्नेन परीक्षिता सर्वाध्यक्षाणाम्, उत्साहयिता कृतकर्मणामनुरूपैर्दानमानैः, सद्यः प्रतिकर्त्ता दैवमानुषीणामापदाम्, षाड्गुण्योपयोगनिपुणः, मनुमार्गेण प्रणेता चातुर्वर्ण्यस्य, पुण्यश्लोकः पुण्यवर्मा नामाऽऽसीत्।

ख. न हि तं पश्यामि यो ह्यपरिचितयानया न निर्भरमुपगूढः, यो वा न विप्रलब्धः। नियतमियमा लेख्यगतापि चलति ,पुस्तमय्यपीन्द्र जालमाचरति ,उत्कीर्णापि विप्रलभते,श्रुताप्यभि सन्धत्ते ,चिन्तितापि वञ्चयति ।

ग. तदेवमहर्निशमविहितसुखलेश माया सबहुलम् विरलकदर्थनं च नयतो न यज्ञस्यास्तां चक्रवर्तिता स्वमण्डलमात्रमपि दुरारक्ष्यं भवेत्। शास्त्रज्ञसमज्ञातो हि यद् ददाति, यन्मानयति, यत् प्रियं ब्रवीति, तत्सर्वमभिसंधातुमित्यविश्वासः। अविश्वास्यता हि जन्मभूमिरलक्ष्म्याः। यावता च नयेन

विना न लोकयात्रा स लोकत एव सिद्धः। नात्र शास्त्रेणार्थः। स्तनंधयोऽपि हि तैस्तैरुपायैः स्तनपानं जनन्या लिप्सते, तदपास्मातियन्त्रणा–मनुभूयन्तां यथेष्टमिन्द्रियसुखानि।

प्रश्न 2 अधोलिखित में से किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर लिखिए – (6× 10= 60)

क. कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशय की विवेचना कीजिए ।

ख. लौकिक संस्कृत गद्य की विशेषताओं को विस्तार से लिखिए ।

ग. विश्रुतचरितम के विविध पात्रों की विशेषताओं को लिखिए ।

घ. शुकनासोपदेश में वर्णित दोषों पर प्रकाश डालिए ।

ड. शिवराजविजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है, स्पष्ट कीजिए ।

च . नीति और लोक कथाओं के उद्भव और विकास पर लेख लिखिए ।

छ. बाणभट्ट की भाषाशैली पर प्रकाश डालिए ।